॥ श्री आसारामायण ॥

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा ।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ॥
श्रीगुरु पद नख मनि गन जोति ।
सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती ॥
गुरु पदरज मृदु मंजुल अंजन ।
नयन अमिअ दृगदोष विभंजन ॥
गुरु बिन भवनिधि तरहिं न कोई ।
जो बिरंचि शंकर सम होई ॥

॥ श्री आसारामयण ॥

गुरु चरण रज शीष धरि, हृदय रूप विचार ।
श्री आसारामायण कहौं, वेदान्त को सार ॥
धर्म कामार्थ मोक्ष दे, रोग शोक संहार ।
भजे जो भक्ति भाव से, शीघ्र हो बेड़ा पार ॥

भारत सिंधु नदी बखानी, नवाब जिले में गाँव बेराणी ।
रहता एक सेठ गुण खानि, नाम थाऊमल सिरुमलानी ॥
आज्ञा में रहती मेंहगीबा, पतिपरायण नाम मंगीबा ।
चैत वद छः उन्नीस अठानवे, आसुमल अवतरित आँगने ॥
माँ मन में उमड़ा सुख सागर, द्वार पे आया एक सौदागर ।
लाया एक अति सुन्दर झूला, देख पिता मन हर्ष से फूला ॥
सभी चकित ईश्वर की माया, उचित समय पर कैसे आया ।
ईश्वर की ये लीला भारी, बालक है कोई चमत्कारी ॥

संत सेवा औ श्रुति श्रवण, मात पिता उपकारी ।
धर्म पुरुष जन्मा कोई, पुण्यों का फल भारी ॥

सूरत थी बालक की सलोनी, आते ही कर दी अनहोनी ।
समाज में थी मान्यता जैसी, प्रचलित एक कहावत ऐसी ॥
तीन बहन के बाद जो आता, पुत्र वह त्रेखण कहलाता ।
होता अशुभ अमंगलकारी, दरिद्रता लाता है भारी ॥
विपरीत किंतु दिया दिखाई, घर में जैसे लक्ष्मी आई ।
तिरलोकी का आसन डोला, कुबेर ने भंडार ही खोला ।
मान प्रतिष्ठा और बड़ाई, सबके मन सुख-शांति छाई ॥

तेजोमय बालक बढ़ा, आनन्द बढ़ा अपार ।
शील शांति का आत्मधन, करने लगा विस्तार ॥

एक दिना थाऊमल द्वारे, कुलगुरु परशुराम पधारे ।
ज्यूँ ही वे बालक को निहारे, अनायास ही सहसा पुकारे ॥
यह नहीं बालक साधारण, दैवी लक्षण तेज है कारण ।

नेत्रों में है सात्विक लक्षण, इसके कार्य बड़े विलक्षण ॥
यह तो महान् संत बनेगा, लोगों का उद्धार करेगा ।
सुनी गुरु की भविष्यवाणी, गदगद हो गये सिरुमलानी ।
माता ने भी माथा चूमा, हर कोई ले करके घूमा ॥

ज्ञानी वैरागी पूर्व का, तेरे घर में आय ।
जन्म लिया है योगी ने, पुत्र तेरा कहलाय ॥
पावन तेरा कुल हुआ, जननी कोख कृतार्थ ।
नाम अमर तेरा हुआ, पूर्ण चार पुरुषार्थ ॥

सैंतालीस में देश विभाजन, पाक में छोड़ा भू पशु औ धन ।
भारत अमदावाद में आये, मणिनगर में शिक्षा पाये ॥
बड़ी विलक्षण स्मरण शक्ति, आसुमल की आशु युक्ति ।
तीव्र बुद्धि एकाग्र नम्रता, त्वरित कार्य औ सहनशीलता ॥
आसुमल प्रसन्न मुख रहते, शिक्षक हँसमुखभाई कहते ।
पिस्ता बादाम काजू अखरोटा, भरे जेब खाते भर पेटा ॥
दे दे मक्खन मिश्री कूजा, माँ ने सिखाया ध्यान औ पूजा ।
ध्यान का स्वाद लगा तब ऐसे, रहे न मछली जल बिन जैसे ॥
हुए ब्रह्मविद्या से युक्त वे, वही है विद्या या विमुक्तये ।
बहुत रात तक पैर दबाते, भरे कंठ पितु आशिष पाते ॥

पुत्र तुम्हारा जगत में, सदा रहेगा नाम ।
लोगों के तुमसे सदा, पूरण होंगे काम ॥

सिर से हटी पिता की छाया, तब माया ने जाल फैलाया ।
बड़े भाई का हुआ दुःशासन, व्यर्थ हुए माँ के आश्वासन ॥
छूटा वैभव स्कूली शिक्षा, शुरु हो गई अग्निपरीक्षा ।
गये सिद्धपुर नौकरी करने, कृष्ण के आगे बहाये झरने ॥
सेवक सखा भाव से भीजे, गोविन्द माधव तब रीझे ।
एक दिना एक माई आई, बोली हे भगवन् सुखदाई ॥
पड़े पुत्र दुःख मुझे झेलने, खून केस दो बेटे जेल में ।
बोले आसु सुख पावेंगे, निर्दोष छूट जल्दी आवेंगे ।
बेटे घर आये माँ भागी, आसुमल के पाँवों लागी ॥

आसुमल का पुष्ट हुआ, आलौकिक प्रभाव ।
वाकसिद्धि की शक्ति का, हो गया प्रादुर्भाव ॥

बरस सिद्धपुर तीन बिताये, लौट अमदावाद में आये ।
करने लगी लक्ष्मी नर्तन, किया भाई का दिल परिवर्तन ॥
दरिद्रता को दूर कर दिया, घर वैभव भरपूर कर दिया ।
सिनेमा उन्हें कभी न भाये, बलात् ले गये रोते आये ॥
जिस माँ ने था ध्यान सिखाया, उसको ही अब रोना आया ।
माँ करना चहती थी शादी, आसुमल का मन वैरागी ॥
फिर भी सबने शक्ति लगाई, जबरन कर दी उनकी सगाई ।
शादी को जब हुआ उनका मन, आसुमल कर गये पलायन ॥

पंडित कहा गुरु समर्थ को, रामदास सावधान ।
शादी फेरे फिरते हुए, भागे छुड़ाकर जान ॥

करत खोज में निकल गया दम, मिले भरुच में अशोक आश्रम ।
कठिनाई से मिला रास्ता, प्रतिष्ठा का दिया वास्ता ॥
घर में लाये आजमाये गुर, बारात ले पहुँचे आदिपुर ।
विवाह हुआ पर मन दृढ़ाया, भगत ने पत्नी को समझाया ॥
अपना व्यवहार होगा ऐसे, जल में कमल रहता है जैसे ।
सांसारिक व्यवहार तब होगा, जब मुझको साक्षात्कार होगा ।
साथ रहे ज्यूँ आत्माकाया, साथ रहे वैरागी माया ।

अनश्वर हूँ मैं जानता, सत चित हूँ आनन्द ।
स्थिति में जीने लगूँ, होवे परमानन्द ॥

मूल ग्रंथ अध्यन के हेतु, संस्कृत भाषा है एक सेतु ।
संस्कृत की शिक्षा पाई, गति और साधना बढ़ाई ॥
एक श्लोक हृदय में पैठा, वैराग्य सोया उठ बैठा ।
आशा छोड नैराश्यवलंबित, उसकी शिक्षा पुर्ण अनुश्ठित ।
लक्ष्मी देवी को समझाया, ईश प्राप्ति ध्येय बताया ॥
छोड़ के घर मैं अब जाऊँगा, लक्ष्य प्राप्त कर लौट आऊँगा ॥
केदारनाथ के दर्शन पाये, लक्षाधिपति आशिष पाये ।

पुनि पूजा पुनः संकल्पाये, ईश प्राप्ति आशिष पाये ॥
आये कृष्ण लीलास्थली में, वृन्दावन की कुंज गलिन में ।
कृष्ण ने मन में ढ़ाला, वे जा पहुँचे नैनिताला ॥
वहाँ थे श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठित, स्वामी लीलाशाह प्रतिष्ठित ।
भीतर तरल थे बाहर कठोरा, निर्विकल्प ज्यूँ कागज कोरा ।
पूर्ण स्वतंत्र परम उपकारी, ब्रह्मस्थित आत्म–साक्षात्कारी ॥

ईशकृपा बिन गुरु नहीं, गुरु बिना नहीं ज्ञान ।
ज्ञान बिना आत्मा नहीं, गावहिं वेद पुरान ॥

जानने को साधक की कोटि, सत्तर दिन तक हुई कसौटी ।
कंचन को अग्नि में तपाया, गुरु ने आसुमल बुलवाया ॥
कहा गृहस्थ हो कर्म करना, ध्यान भजन घर पर ही करना ।
आज्ञा मानी घर पर आये, पक्ष में मोटी कोरल धाये ॥
नर्मदा तट पर ध्यान लगाये, लालजी महाराज आकर्षाये ।
सप्रेम शीलस्वामी पहँधाये, दत्तकुटीर में साग्रह लाये ॥
उमड़ा प्रभु प्रेम का चसका, अनुष्ठान चालीस दिवस का ।
मरे छः शत्रु स्थिति पाई, ब्रह्मनिष्ठता सहज समाई ॥
शुभाशुभ सम रोना गाना, ग्रीष्म ठंड़ मान औ अपमाना ।
तृप्त हो खाना भूख अरु प्यास, महल हो कुटिया आसनिरास ।
भक्तियोग ज्ञान अभ्यासी, हुए समान मगहर औ कासी ॥

भाव ही कारण ईश है, न स्वर्ण काठ पाषान ।
सत चित आनंदरूप है, व्यापक है भगवान ॥
ब्रह्मेशान जनार्दन, सारद सेस गणेश ।
निराकार साकार है, है सर्वत्र भवेश ॥

हुए आसुमल ब्रह्माभ्यासी, जन्म अनेकों लागी बासी ।
दूर हो गई आधि–व्याधि, सिद्ध हो गई सहज समाधि ॥
इक रात नदी तट मन आकर्षा, आई जोर से आँधी वर्षा ।
बंद मकान बरामदा खाली, बैठे वहीं समाधि लगा ली ।
देखा किसीने सोचा डाकू, लाये लाठी भाला चाकू ।
दौड़े चीखे शोर मच गया, टूटी समाधि ध्यान खिंच गया ॥

साधक उठा था बिखरे केशा, राग–द्वेष ना किंचित् लेशा ।
सरल लोगों ने साधु माना, हत्यारों ने काल ही जाना ॥
भैरव देख दुष्ट घबराये, पहलवान ज्यूँ मल्ल ही पाये ।
कामीजनों ने आशिक माना, साधुजन कीन्हें परनामा ॥

एक दृष्टि देखे सभी, चले शांत गम्भीर ।
सशस्त्रों की भीड़ को, सहज गये वे चीर ॥

माता आई धर्म की सेवी, साथ में पत्नी लक्ष्मी देवी ।
दोनों फूट फूट कर रोई, रुदन देख करुणा भी रोई ॥
संत लालजी हृदय पसीजा, हर दर्शक आँसू में भीजा ।
कहा सभी ने आप जाइयो, आसुमल बोले कि भाईयों ॥
चलीस दिवस हुआ नहीं पूरा, अनुष्ठान है मेरा अधूरा ।
आसुमल ने छोड़ी तितिक्षा, माँ पत्नी ने की परतीक्षा ॥
जिस दिन गाँव से हुई विदाई, जार जार रोये लोग–लुगाई ।
अमदावाद को हुए रवाना, मियाँगाँव से किया पयाना ।
मुंबई गये गुरु की चाह, मिले वहीँ पै लीलाशाह ।
परम पिता ने पुत्र को देखा, सूरज ने घटजल में पेखा ॥
घटक तोड़ जल जल में मिलाया, जल प्रकाश आकाश में छाया ।
निज स्वरूप का ध्यान दृढ़ाया, ढाई दिवस होश न आया ॥

आसोज सुद दो दिवस, संवत बीस इक्कीस ।
मध्याह्न ढाई बजे, मिला ईस से ईस ॥
देह सभी मिथ्या हुई, जगत हुआ, निस्सार ।
हुआ आत्मा से तभी, अपना साक्षात्कार ॥

परम स्वतंत्र पुरुष दर्शाया, जीव गया और शिव को पाया ।
जान लिया हूँ शांत निरंजन, लागू मुझे न कोई बन्धन ॥
यह जगत सारा है नश्वर, मैं ही शाश्वत एक अनश्वर ।
दीद हैं दो पर दृष्टि एक है, लघु गुरु में वही एक है ॥
सर्वत्र एक किसे बतलाये, सर्वव्याप्त कहाँ आये जाये ।
अनन्त शक्ति वाला अविनाशी, रिद्धि–सिद्धि उसकी दासी ॥
सारा ही ब्रह्माण्ड पसारा, चले उसकी इच्छानुसारा ।

यदि वह संकल्प चलाये, मुर्दा भी जीवित हो जाये ॥

ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर, कार्य रहे ना शेष ।
मोह कभी ना ठग सके, इच्छा नहीं लवलेश ॥
पूर्ण गुरु कृपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान ।
आसुमल से हो गये, साँई आसाराम ॥

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति चेते, ब्रह्मानन्द का आनन्द लेते ।
खाते पीते मौन या कहते, ब्रह्मानन्द मस्ती में रहते ॥
रहो गृहस्थ गुरु का आदेश, गृहस्थ साधु करो उपदेश ।
किये गुरु ने वारे न्यारे, गुजरात डीसा गाँव पधारे ।
मृत गाय दिया जीवन दाना, तबसे लोगों ने पहचाना ॥
द्वार पै कहते नारायण हरि, लेने जाते कभी मधुकरी ।
तबसे वे सत्संग सुनाते, सभी आर्ती शांति पाते ॥
जो आया उद्धार कर दिया, भक्त का बेड़ा पार कर दिया ।
कितने मरणासन्न जिलाये, व्यसन मांस और मद्य छुड़ाये ॥

एक दिन मन उकता गया, किया डीसा से कूच ।
आई मौज फकीर की, दिया झोंपड़ा फूँक ॥

वे नारेश्वर धाम पधारे, जा पहुंचे नर्मदा किनारे ।
मीलों पीछे छोड़ा मन्दर, गये घोर जंगल के अन्दर ॥
घने वृक्ष तले पत्थर पर, बैठे ध्यान निरंजन का धर ।
रात गई प्रभात हो आई, बाल रवि ने सूरत दिखाई ॥
प्रातः पक्षी कोयल कूकन्ता, छूटा ध्यान उठे तब संता ।
प्रातर्विधि निवृत हो आये, तब आभास क्षुधा का पाये ॥
सोचा मैं न कहीं जाऊँगा, यहीं बैठकर अब खाऊँगा ।
जिसको गरज होगी आयेगा, सृष्टिकर्ता खुद लायेगा ॥
ज्यूँ ही मन विचार वे लाये, त्यूँ ही दो किसान वहाँ आये ।
दोनों सिर पर बाँधे साफा, खाद्य पेय लिये दोनों हाथा ॥
बोले जीवन सफल है आज, अर्घ्य स्वीकारो महाराज ।
बोले संत और पै जाओ, जो है तुम्हारा उसे खिलाओ ॥
बोले किसान आपको देखा, स्वप्न में मार्ग रात को देखा ।

हमारा न कोई संत है दूजा, आओ गाँव करें तुम्हरी पूजा ॥
आसाराम तब मन में धारे, निराकार आधार हमारे ।
पिया दूध थोड़ा फल खाया, नदी किनारे जोगी धाया ॥

गाँधीनगर गुजरात में, है मोटेरा ग्राम ।
ब्रह्मनिष्ठ श्री संत का, यहीं है पावन धाम ॥
आत्मानंद में मस्त हैं, करें वेदान्ती खेल ।
भक्ति योग और ज्ञान का, सदगुरु करते मेल ॥
साधिकाओं का अलग, आश्रम नारी उत्थान ।
नारी शक्ति जाग्रत सदा, जिसका नहीं बयान ॥

बालक वृद्ध और नरनारी, सभी प्रेरणा पाये भारी ।
एक बार जो दर्शन पाये, शांति का अनुभव कर जाये ॥
नित्य विविध प्रयोग करायें, नादानुसन्धान बतायें ।
नाभि से वे ओम कहलायें, हृदय से राम कहलायें ॥
सामान्य ध्यान जो लगायें, उन्हें वे गहरे में ले जायें ।
सबको निर्भय योग सिखायें, सबका आत्मोत्थान करायें ॥
हजारों के रोग मिटायें, और लाखों के शोक छुड़ायें ।
अमृतमय प्रसाद जब देते, भक्त का रोग शोक हर लेते ॥
जिसने नाम का दान लिया है, गुरु अमृत का पान किया है ।
उनका योग क्षेम वे रखते, वे तीन तापों से तपते ॥
धर्म कामार्थ मोक्ष वे पाते, आपद रोगों से बच जाते ।
सभी शिष्य रक्षा पाते हैं, सूक्ष्म शरीर गुरु आते हैं ॥
सचमुच गुरु हैं दीनदयाल, सहज ही कर देते हैं निहाल ।
वे चाहते सब झोली भर लें, निज आत्मा का दर्शन कर लें ॥
एक सौ आठ जो पाठ करेंगे, उनके सारे काज सरेंगे ।
गंगाराम शील हैं दासा, होंगी पूर्ण सभी अभिलाषा ॥

वराभयदाता सदगुरु, परम हि भक्त कृपाल ।
निश्छल प्रेम से जो भजे, साँई करे निहाल ॥
मन मे तेरा नाम रहे, मुख पे रहे सुगीत ।
हमको इतना दीजिए, रहे चरण में प्रीत ॥

॥ गुरु महिमा ॥

गुरु बिन ज्ञान न उपजे, गुरु बिन मिटे न भेद ।
गुरु बिन संशय ना मिटे, जय जय जय गुरुदेव ॥

तीरथ का है एक फल, संत मिले फल चार ।
सदगुरु मिले अनंत फल, कहत कबीर विचार ॥

भव भ्रमण संसार दुःख, ता का वार न पार ।
निर्लोभी सदगुरु बिना, कौन उतारे पार ॥

पूरा सदगुरु सेवतां, अंतर प्रगटे आप ।
मनसा वाचा कर्मणा, मिटें जन्म के पाप ॥

समदृष्टि सदगुरु किया, मेटा भरम विकार ।
जहँ देखो तहँ एक ही, साहिब का दीदार ॥

आत्मभांति सम रोग नहीं, सदगुरु वैद्य सुजान ।
गुरुआज्ञा बिन पथ्य नहीं, औषध विचार ध्यान ॥

सदगुरु पद में समात हैं, अरिहंतादि पद सब ।
तातैं सदगुरु चरण को, उपासो तजि गर्व ॥

बिना नयन पावे नहीं, बिना नयन की बात।
सेवे सदगुरु के चरण, सो पावे साक्षात् ॥

हरि ॐ हरि ॐ......... हरि ॐ हरि ॐ.........
हरि ॐ हरि ॐ......... हरि ॐ हरि ॐ.........